इन्दिरागान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी
मार्ग-देशी कार्यक्रम
०५ जनवरी २०१७

इन्दिरागान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी द्वारा दिनांक ०५ जानवरी २०१७ को पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिसर में स्थित इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के क्षेत्रीय केन्द्र में विलुप्त हो रहे गुरु-शिष्य परम्परा के संरक्षण हेतु "मार्ग-देशी" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सभाध्यक्ष के आसन पर विराजमान थे प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर प्रद्योत कुमार मुखोपाध्याय जी एवं मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे क्षेत्रीय केन्द्र के पूर्व सलाहकार प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी जी। सारस्वत अनुष्ठान का प्रारम्भ डॉ० नरेन्द्र दत्त तिवारी जी के वैदिक मंगलाचरण से हुआ। तदुपरान्त सभाध्यक्ष, मुख्य अतिथि तथा सभागर में उपस्थित विद्वानों द्वारा माँ सरस्वती जी का माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ० विजय शंकर शुक्ल जी ने स्वागत भाषण में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की मूलशास्त्र सम्बन्धी योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि एक तरफ हम एक ऐसी सारस्वत परम्परा का स्मरण कर रहे हैं जिसे हमें आगे ले जाना है और सतत चिन्तन की परम्परा को स्थापित एवं आने वाली पीढ़ियों के लिए संचित करना है। दूसरी तरफ एक नये चिन्तन एवं गवेषणा का प्रारम्भ है, जो भारत अध्ययन केन्द्र के रूप में है। वस्तुत: इन दोनों का जा संगम है वो आचार्य त्रिपाठी जी के साधना के रूप में है। स्वागत भाषण के उपरान्त श्री संजय सिंह एवं श्री गौतम कुमार चटर्जी ने क्रमश: मुख्य अतिथि एवं सभाध्यक्ष का पुष्पहार से सम्मानित किया एवं डॉ० शुक्ल जी ने अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि को अंग वस्त्र देकर सममानित किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी जी ने कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के योगदान को रेखांकित करते हुए इसके साथ जुडे अपने लम्बे

अनुभव से श्रोताओं को अवगत कराया। उन्होंने कहा काशी का केन्द्र विशिष्ट है क्योंकि काशी समस्त भारत में शास्त्रों , विचारों एवं भारतीय ज्ञान-परम्परा का केन्द्र है। पद्मविभूषण माननीया कपिला वात्स्यायन जी ने इसी को ध्यान में रखते हुए काशी में इस संस्था की स्थापना की। साथ ही उन्होंने कहा कला और संस्कृति के क्षेत्र में काम कर रहे अन्य संस्थाओं के साथ सहभागिता से इसके कार्यों को और गति प्रदान किया जा सकता है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रोफेसर प्रद्योत कुमार मुखोपाध्याय जी ने कहा कि सर्वप्रथम कलाकोश प्रभाग के अन्तर्गत इस केन्द्र की स्थापना हुई थी। किन्तु समानान्तर से इस केन्द्र में, केन्द्र के अन्य विभागों के अनेक कार्यक्रम एवं योजनाएँ संचालित है और यह समयोपयोगी भी है। आज यह संस्था एक विद्याचर्चा के केन्द्र के रूप में विद्यमान है, प्रतिष्ठित है। कोश ग्रन्थ में लिखित बात का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा **"मोक्षे धी ज्ञानम् , अन्यत्र शिल्पशास्त्रम्**" इन दोनों बिन्दु के अनुसार दर्शन, विज्ञान एवं कला आदि क्षेत्रों के साथ समन्वय स्थापित करने में यह केन्द्र सफल रहा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रारम्भ में गायक कलाकार डॉ० मधुमिता भट्टाचार्य एवं संगत कलाकारों को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया। गायन प्रस्तुति के क्रम में डॉ० मधुमिता भट्टाचार्य के द्वारा खयाल, ठुमरी, दादरा, भजन आदि की सुन्दर प्रस्तुति न श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया। सभागार में प्रोफेसर रामचन्द्र पाण्डेय, प्रोफेसर श्रीकिशोर मिश्र, प्रोफेसर मनुलता शर्मा, प्रोफेसर कमल गिरि, प्रोफेसर कौशलेन्द्र पाण्डेय, प्रोफेसर उपेन्द्र पाण्डेय, प्रोफेसर श्रीप्रकाश पाण्डेय आदि अनेक गण्यमान्य विद्वान् उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ० रजनी कान्त त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ० त्रिलोचन प्रधान ने किया।